By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

विदेश नीति से क्या अभिप्राय है? भारत के विदेश नीति के मूलभूत सिद्धांतों का विवेचन

(What do you mean by foreign policy. describe its main principles)

पंचशील के नियम

(i) प्रभुसत्ता का सम्मान: विश्व के सभी राष्ट्रों को चाहिए कि वे एक दूसरे की प्रभुसत्ता को सम्मान व आदर प्रदान करें।

(ii) अनाक्रमण:- एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर आक्रमण नहीं करना चाहिए।

(iii) अहस्तक्षेप: एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

(iv) समानता:- सभी राष्ट्र समान हैं और किसी भी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के हितों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उनको परस्पर हित के काम करने चाहिए।

(v) शांतिपूर्ण सहअस्तित्व:- सभी राष्ट्रों को चाहिए कि वे स्वयं जीवित रहें और दूसरों को जीवित रहने दें। आपसी झगड़ों का फैसला बातचीत द्वारा शांति के तरीकों से करें।

4. उपनिवेशवाद का विरोध: भारत ने स्वतंत्रता के पश्चात उपनिवेशवाद का घोर विरोध किया। जिन राष्ट्रों ने साम्राज्यवाद से मुक्त होने के लिए प्रयास किये उनका हमारे देश की सरकार ने हर जगह से समर्थन किया। भारत ने वियतनाम में अमरीकी कार्यवाही का विरोध किया था। इसी प्रकार रूस द्वारा हंगरी में हस्तक्षेप की भी भारत ने निन्दा की थी।

5. संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन:- भारत ने प्रारम्भ से ही संयुक्त राष्ट्रसंघ का समर्थन किया। जब भी आवश्यकता पड़ी भारत ने संयुक्त राष्ट्रसंघ को अपना पूरा सहयोग दिया तथा संघ ने भी उसके द्वारा दिये निर्णय को अपने पर लागू किया।

भारत ने सदा संयुक्त राष्ट्र संघ में अपनी आस्था प्रकट की तथा उसके निर्णयों का स्वागत किया। भारत ने संघ के राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहण की थी, साथ ही अन्य देशों को भी इसकी सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। भारत के श्री कृष्ण मेनन के प्रयासों से ही एक साथ 16 देशों को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता प्राप्त हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्य उद्देश्य विश्व में शांति की स्थापना और राष्ट्रों में परस्पर सहयोग की भावना का विकास करना है। यही उद्देश्य भारत की विश्व नीति का रहा है।

6. सभी से मित्रता:- भारत सभी राष्ट्रों में परस्पर घृणा व द्वेष के स्थान पर परस्पर प्रेम व मित्रता में विश्वास करता है। गुट निरपेक्षता की नीति का अर्थ तो सब देशों से प्रेम संबंध रखना है न कि संबंधों के प्रति उदासीन होना। पं. नेहरू ने इस कारण ही एक अवसर पर कहा था- "मेरा यह विचार है कि इस विशाल विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है जिससे आपस में हमारे संबंध शत्रुतापूर्ण या विरोधी हों। स्वाभाविक रूप से हम अपने भौगोलिक या व्यापारिक संबंधों के कारण कुछ देशों की ओर आकृष्ट होंगे, किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि हम सभी के मित्र हैं।"

7. छोटे-छोटे देशों पर विशेष ध्यान:- श्रीमती गाँधी के युग में एक और उल्लेखनीय परिवर्तन आया कि अब भारत छोटे-छोटे देशों की ओर अधिक ध्यान देने लगा तथा उनकी मित्रता प्राप्त करने का प्रयास करने लगा। अफगानिस्तान, श्रीलंका, बर्मा आदि को भारत यात्रा का निमंत्रण दिया जाने लगा तथा इन देशों से व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध भी स्थापित किए गए।